# मकर तथा कुम्भ स्नान महात्म्यः

**जयप्रकाश शर्मा**
साहित्याचार्य, लिपि एवं पाण्डुलिपि विशेषज्ञ
समन्वयक - पद्म श्री नारायण दास पाण्डुलिपि शोध संस्थान, जयपुर

मकर तथा कुम्भ स्नान महात्म्यः' पौष शुक्ला पूर्णिमा से माघ शुक्ला पूर्णिमा तक माघ मेला और माघ स्नान होता है। माघ कृष्णा एकादशी मौनी अमावस, बसन्त पञ्चमी, माघ शुक्ला एकादशी और माघ शुक्ला पूर्णिमा ये स्नान के पर्व दिन हैं। यदि दीन क्षीण मनुष्य इन दिनों में वीस दिन भी स्नान कर ले तो वह दीर्घजीवी और लक्ष्मीवान् बनता है। माघ में होम दान और तप यह तीन बातें ही मुख्य हैं। इनके करने से अनन्त फल मिलता है। माघ स्नान एक मास अन्न त्याग कर दान तपस्या करते हुए करना चाहिए। प्रजा के लिए सकाम भाव से भगवान को प्रसन्न करने के निमित्त सात्विक भाव से शारीरिक शुद्धि के लिये श्रद्धाभाव से या अन्य वस्तु प्राप्ति की इच्छा से यह स्नान किया जाता है।

पद्मपुराण के उत्तर खण्ड में लिखा है-सैकड़ों पापों से घिरा मनुष्य यदि माघ में जब मकर राशि को सूर्य भोगते हों त्रिवेणी के श्वेत श्याम जल में स्नान करे तो उसे फिर गर्भ धारण नहीं करना पड़ता। यदि माघ मास में कसाई भी संगम में स्नान कर लेता है तो, उसे परम पद मिलता है। गुप्त रूप से मिली हुई सरस्वती मय जो सितासित त्रिवेणी की धारा है उसे ब्रह्मा ने विष्णु लोक का मार्ग बना दिया है। मलीन मेघमाला के हटने पर जिस तरह शरद का चन्द्रमा देदीप्यमान होता है उसी प्रकार संगम में स्नान करने से मनुष्य भी सर्व पापों से मुक्त हो जाता है और वह दिव्य देह प्राप्त करता है। मकर संक्रांति को शुद्ध अन्तःकरण और एकाग्र चित्त से नीचे लिखे मन्त्र का उच्चारण करते हुए मौन रख कर स्नान करना चाहिये।

**मकरस्थे रवौ माघे गोविन्दाच्युत माधवः ।**
**स्नानेनानेन मो देव यथोक्त फलदो भवः ।।**